International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 488-496

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 488-496
www.allresearchjournal.com
Received: 04-10-2015
Accepted: 08-11-2015

डॉ. संदीप कुमार शर्मा
सांख्यिकी सहायक,
चिकित्सा अभिलेख अनुभाग,
सर सुन्दरलाल चिकित्सालय,
बी.एच.यू.,वाराणसी

मकबूल आलम
चिकित्सा अभिलेख सहायक,
चिकित्सा अभिलेख अनुभाग,
सर सुन्दरलाल चिकित्सालय,
बी.एच.यू.वाराणसी

डॉ. अजय सिंह
चिकित्सा अभिलेख अधिकारी,
चिकित्सा अभिलेख अनुभाग,
सर सुन्दरलाल चिकित्सालय,
बी.एच.यू.वाराणसी

Correspondence
डॉ. अजय सिंह
चिकित्सा अभिलेख अधिकारी,
चिकित्सा अभिलेख अनुभाग,
सर सुन्दरलाल चिकित्सालय,
बी.एच.यू., वाराणसी

सर सुन्दर लाल चिकित्सालयः एक सांख्यिकी विश्लेषण

डॉ. संदीप कुमार शर्मा, मकबूल आलम, डॉ. अजय सिंह

सारांश
प्रस्तुत अनुसंधान लेख में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान के सर सुन्दरलाल चिकित्सालय के बहिरंग और अंतरंग में आयें मरीजों के ऑकड़ो का अवलोकन किया गया है। चिकित्सालय की स्थापना महामना पंड़ित मदनमोहन मालवीय जी द्वारा रोंगों से पीड़ित जनता की सेवा के लिए की थी तथा सन् 1926 में प्रथम कुलपति श्री सर सुन्दरलाल जी की स्मृति में इस चिकित्सालय का उद्घाटन हुआ यहाँ पर पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश से अपना इलाज कराने आतें है।

बीज शब्द: भारतीय चिकित्सा पद्धति, आधुनिक चिकित्सा पद्धति, बहिरंग विभाग, अंतरंग विभाग, पुराने व नये मरीजो की संख्या।

भूमिका
चिकित्सालय या अस्पताल तथा औषधालय मानव सभ्यता के आदिकाल से ही बनते चले आए हैं। वेद और पुराणों के अनुसार स्वयं भगवान ने प्रथम चिकित्सक के रूप में अवतार लिया था। 5,000 वर्ष या इससे भी प्राचीन इतिहास में चिकित्सालयों के प्रमाण मिलते हैं, जिनमें चिकित्सक तथा शल्यकोविद (सर्जन) काम करते थे। ये चिकित्सक तथा सर्जन रोगियों को रोगमुक्त करने और उनके आर्तिनाशन तथा मानवता की ज्ञानवृद्धिके भावों से प्रेरित होकर स्वयं सेवक की भांति अपने कर्म में प्रवृत्त रहते थे। ज्यों–ज्यों सभ्यता तथा जनसंख्या बढ़ती गई त्यों–त्यों सुसज्जित चिकित्सालयों तथा सुसंगठित चिकित्सा विभाग की आवश्यकता भी प्रतीत होने लगी।
अनादि काल से काशी विद्या की नगरी रही है। प्राचीन काल मे किसी भी विद्वान की, जिस पर काशी की छाप नही लगी, उसे विद्वत समाज में मान्यता नही प्राप्त होती थी। आयुर्विज्ञान के जन्मदाता श्री धन्वन्तरि ने सर्वप्रथम यहीं पर चिकित्सा विज्ञान की आधार शिला रखी। उनके सुयोग्य शिष्य महर्षि सुश्रुत ने शल्य विज्ञान का अध्ययन–अध्यापन भी यहीं किया। उनके कुशल निर्देशन में शल्य विज्ञान अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचा। कालान्तर में विशेष कारणों और परिस्थितियों से वह विज्ञान धीरे–धीरे लुप्त हो गया।
काशी की गौरवमयी परम्परा को पुनः प्रतिष्ठापित करने के लिए पूज्यनीय महामना ने इस विश्वविद्यालय का निर्माण किया। वे पुरातन आयुर्विज्ञान को विज्ञान सम्मत बनाने की हार्दिक अभिलाषा रखते थे। सर्वप्रथम प्राच्य विद्या संकाय के अन्तर्गत एक आयुर्वेद विभाग बना। जिसे बाद में एक स्वतन्त्र संकाय का स्वरूप दिया गया। सन् 1924 में तत्कालीन काशीराज महाराज प्रभुनारायण सिंह के कर कमलों द्वारा सर सुन्दरलाल चिकित्सालय का शिलान्यास हुआ।
सर सुन्दर लाल चिकित्सालय की स्थापना महामना मालवीय जी द्वारा रोगों से पीड़ित जनता की सेवा के लिए हुई थी। प्रारम्भ में रोंगियों के बिस्तरों की संख्या केवल 100 के लगभग थी। सन् 1920 ई से इसका विस्तार होना प्रारम्भ हुआ। वर्तमान समय में 1250 से अधिक रोंगियों के लिए शैय्याओं की व्यवस्था है। पूर्वी उत्तर प्रदेश बिहार राज्य नेपाल तथा मध्य प्रदेश के कुछ भागों के रोगी यहाँ आकर चिकित्सा सेवा का लाभ उठाते हैं। अनेक कठिन रोगों की जांच और मेडिकल सर्जिकल एवम् सभी प्रकार के रोगों की चिकित्सा व्यवस्था यहाँ पर है। पहले इस क्षेत्र के लोगों को इसके लिए दिल्ली बम्बई या बैगॅलोर इत्यादि चिकित्सा केन्द्रों में जाना पड़ता था। अब इस चिकित्सालय में इनकी व्यवस्था का हो जाना गरीबों के लिए वरदान सिद्ध हुआ हैं और रोंगियों की प्राण रक्षा सम्भावित हो गई है।

चिकित्सालय के विभाग चिकित्सालय के मुख्यतः दो विभाग होते है एक अतरंग (इनडोर) विभाग और दूसरा बहिरंग (आउटडोर/ ओ.पी.डी.) विभाग।

बहिरंग विभाग सर सुन्दर लाल चिकित्सालय में 44 ओ.पी.डी है जहाँ चिकित्सालय की अनुसूची (शिड्यूल) के अनुसार सुबह 7:30 बजें से दोपहर 12:00 बजें तक मरीजों का पंजीकरण होता है, जहाँ डाक्टर अपने–अपने ओ.पी.डी में बैठकर मरीजों को देखते है ओर परामर्श देते है। पिछले 5 सालों मे बहिरंग में देखे गये मरीजों की संख्या सारिणीः 1 में दशाई गई है।

सारिणी 1: बहिरंग विभाग (ओ.पी.डी.) में देखें गये मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	कुल मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	536095	448819	984914	468591	382968	133355
2	2011	548663	478471	1027134	487803	404960	134371
3	2012	588885	486150	1075035	511113	434072	129850
4	2013	642501	540511	1183012	565078	476940	140994
5	2014	651367	535685	1187052	560283	491499	135270

सारिणी 1 से स्पष्ट है कि सर सुन्दरलाल चिकित्सालय मे वर्ष 2014 मे 11,87,052 मरीज बहिरंग के विभिन्न अनुभागों मे अपना इलाज कराने आये, जिनमें से 54.87% नये मरीज जबकि 45.13% पुराने मरीज थें। बहिरंग मे देखे गये कुल मरीजो में से 47.20% पुरूष मरीज, 41.41% महिला और 11.40% बच्चें अपना इलाज कराने आयें थें। सारिणी के अनुसार बहिरंग विभाग मे वर्ष 2010 के अन्तगर्त कुल 9,84,914 मरीज आये थें जिनमें से 5,36,095 नये तथा 4,48,819 पुराने मरीज थे। वर्ष 2010 मे कुल मरीजों मे से 13.54% बच्चें, 38.88% महिला तथा 47.58% पुरूषों का इलाज चिकित्सालय में हुआ।

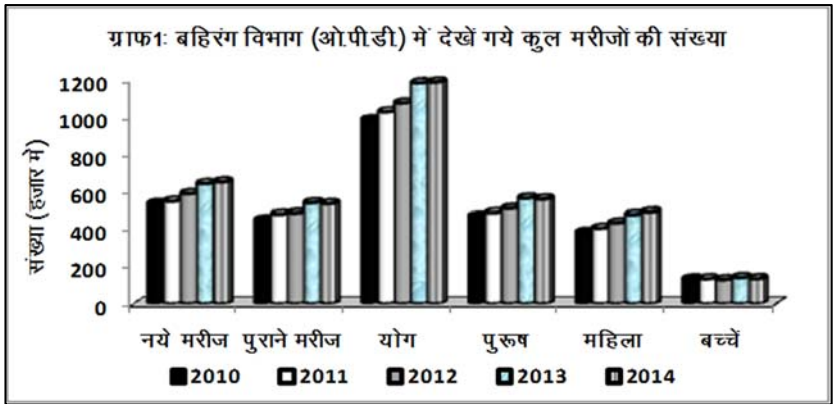

पिछले 5 वर्षो का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ग्रफ 1 से स्पष्ट है कि वर्ष 2010 की तुलना मे वर्ष 2014 मे 1.2 गुना अधिक मरीज देखे गये, अर्थात् वर्ष 2010 की अपेक्षा वर्ष 2014 मे 2 लाख से ज्यादा मरीज सर सुन्दरलाल चिकित्सालय की ओ.पी.डी. मे देखे गये, जबकि यह आंकडा वर्ष 2011 से एक लाख 60 हजार के लगभग वर्ष 2014 मे ज्यादा है। वर्षवार तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि वर्ष 2010 से वर्ष 2012 के बीच प्रत्येक वर्ष 40 हजार से ज्यादा मरीजों की वृद्धि हुई परन्तु वर्ष 2012 व वर्ष 2013 के बीच मे यह अनुपात बढ़कर एक लाख के पास हो गया तथा वर्ष 2014 मे घटकर मात्र 4 हजार रह गया।

(क) सामान्य मेडिकल सम्बंधित ओ.पी.डी. मे मरीजों की संख्या

सामान्य मेडिकल के अन्तगर्त आने वाली ओ.पी.डी. के निम्न अनुभागों को लिया गया है जो निम्न प्रकार से है– मेडिसिन, रीमटोलॉजी, हिमेट्रालॉजी, आन्को मेडिसिन, ए.आर.टी. केन्द्र, जियाट्रिक मेडिसिन, बाल रोग, रेडियोथिरैपी, वक्ष एवं तपेदिक रोग, चर्म एवं गुप्त रोग, मानसिक रोग, बाल निर्देशन क्लिनिक, नशा उन्मुलन तथा वृद्ध अवस्था क्लिनिक के ऑकड़ों को एकत्र किया गया हैं।

सारिणी 2: सामान्य मेडिकल (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	141743	156099	297842	144335	106720	46787
2	2011	141553	163392	304945	140576	113484	50885
3	2012	155894	172817	328761	150101	122616	56044
4	2013	167072	194933	362005	166383	134907	60615
5	2014	167182	184568	351750	162957	139694	49099

सारिणी 2 से स्पष्ट है कि उपयुक्त सभी ओ.पी.डी. मे वर्ष 2010 मे 2,97,842 मरीज देखे गये जबकि वर्ष 2014 मे 3,51,750 जो वर्ष 2014 से 54 हजार ज्यादा है। वर्ष 2014 मे सामान्य मेडिकल से सम्बधित ओ.पी.डी मे देखे गये मरीजों मे 47.53% नये मरीज, 52.47% पुराने मरीज तथा उनमे 39.71% महिलायें, 52.47% पुरूष एवम् 13.96% बच्चें शामिल थें। ग्राफ संख्या 2 से यह भी स्पष्ट है

कि वर्ष 2013 मे 3,62,005 मरीज सामान्य मेडिकल से सम्बधित ओ.पी.डी. मे सबसे ज्यादा दर्ज हुऐ अन्य वर्षो की अपेक्षा।

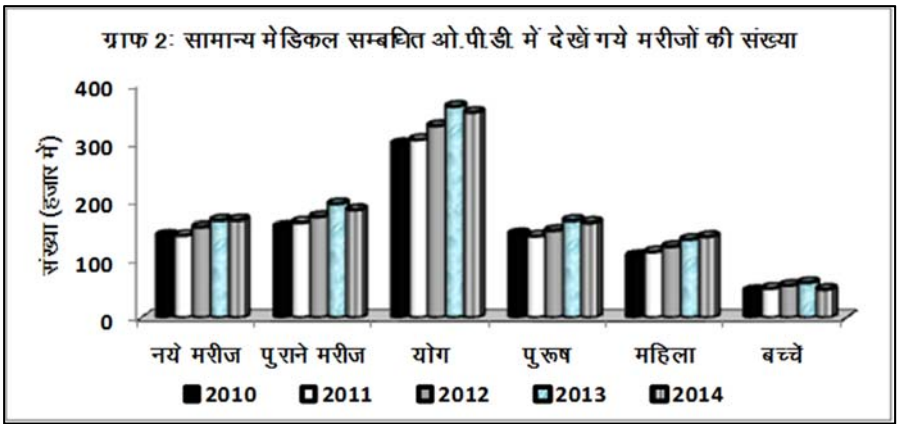

(ख) सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल सम्बंधित ओ.पी.डी. मे मरीजों की संख्या

बहिरंग मे सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल में ओ.पी.डी. के निम्न अनुभागों को रखा गया है, जिनमे न्यूरोलॉजी, हदय रोग, इन्डोकाइनालाजी, गैस्ट्रोइन्ट्रोलॉजी तथा वृक्क रोग के ऑकड़ों का एकत्र किया गया है।

सारिणी 3: सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	64119	65376	129495	72007	47896	9592
2	2011	77507	74553	152060	84778	55646	11636
3	2012	94143	84798	178941	99573	69514	9854
4	2013	103888	90318	194205	108169	77576	8460
5	2014	105253	90979	196232	108652	80523	7057

सारिणी 3 से स्पष्ट है कि वर्ष 2014 में सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल मे कुल 1,96,232 मरीजों का रजिस्टेशन हुआ जो पिछले वर्ष से मात्र 2,027 ज्यादा थी, जबकि यह वृद्धि वर्ष 2010 से केवल 66,737 ज्यादा थी। वर्ष 2014 मे 53.64% नये मरीज, 46.36% पुराने मरीज चिकित्सालय मे अपना स्वास्थ्य परीक्षण के लिए आये थे जिनमें 41.03% महिलायें, 55.37% पुरूष एवम् 3.6% बच्चें शामिल थें।

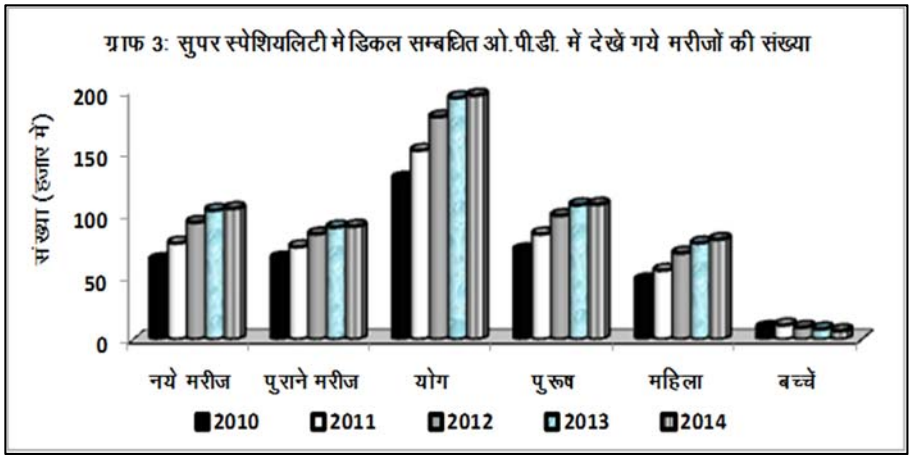

ग्राफ संख्या 3 से स्पष्ट है कि सुपर स्पेशियलिटी ओ.पी.डी. मे पिछले 5 वर्षो मे नये मरीजों की संख्या 50% से ऊपर तथा पुराने मरीजों की संख्या कम थी, जो चिकित्सालय मे अपना इलाज कराने आये थें। ग्राफ के अनुसार पुरूषों की संख्या 55% से अधिक व महिलाओं की संख्या 40% से कम और लगभग 5% बच्चे अपना इलाज कराने सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल मे पिछले 5 वर्षो मे आये।

(ग) सामान्य शल्य चिकित्सा सम्बंधित ओ.पी.डी. मे मरीजों की संख्या

सामान्य शल्य चिकित्सा के क्रममे ओ.पी.डी. के निम्न अनुभागों के ऑकड़ों का आंकलन किया गया है जिनमे क्रम से जनरल सर्जरी, अस्थि शल्य, कान–नाक–गला, नेत्र (आपथैल्मालाजी), प्रसूति एवं स्त्री रोग तथा पोस्ट पार्टम है।

सारिणी 4 के अनुसार वर्ष 2014 मे कुल 3,24,451 मरीज सामान्य शल्य चिकित्सा से सम्बंधी विभिन्न ओ.पी.डी. मे अपना इलाज कराने चिकित्सालस मे आये थे जो संख्या वर्ष 2010 व वर्ष 2012 के क्रमशः 65,323 तथा 34,559 अधिक है। वर्ष 2014 मे शल्य चिकित्सा के अन्तगर्त कुल मरीजों मे से 64% नये मरीज, 36% पुराने मरीज तथा पुरूष, महिला एवम् बच्चें रोगियों की संख्या का प्रतिशत क्रमशः 41%, 50% व 9% था।

सारिणी 4: सामान्य शल्य चिकित्सा (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	176027	83101	259128	103335	128918	26875
2	2011	180855	95240	276095	114818	141105	20172
3	2012	194109	95783	289892	121223	149767	18912
4	2013	207608	110655	318263	137640	155439	25184
5	2014	208085	116366	324451	133610	161560	29281

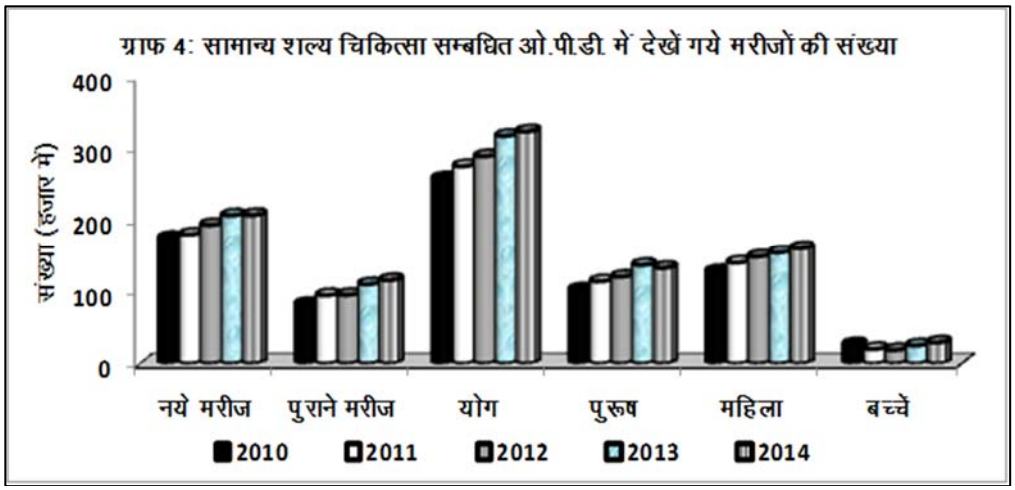

ग्राफ 4 से स्पष्ट है कि पिछले5 वर्षो मे नये तथा पुराने मरीजो की संख्या मे लगातार वृद्धि हुई थी। ग्राफ से यह भी स्पष्ट है कि महिला मरीजों की संख्या मे निरन्तर वृद्धि हुई जबकि बच्चों की संख्या मे वर्ष 2012 तक कमी आयी परन्तु वर्ष 2013 से वृद्धि होनी शुरू हो गयी।

(घ) सुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा सम्बंधित ओ.पी.डी. मे मरीजों की संख्या

न्यूरो सर्जरी, बाल शल्य, प्लास्टिक सर्जरी, ऑकोलाजी, कार्डियोथोरेसिक व यूरोलाजी सभी अनुभागों को ओ.पी.डी. के ऑकडो कोसुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा के अन्तगर्त लिया गया है।

सारिणी 5:सुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	81266	89676	170942	81110	51986	37846
2	2011	70667	80978	151645	71221	42609	37815
3	2012	59812	60453	120265	58345	34482	27438
4	2013	71417	65313	136730	67191	43331	26208
5	2014	71612	66296	137908	67745	42473	27690

सारिणी 5 से स्पष्ट है कि वर्ष 2014 मे 1,37,908 मरीज सुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा मे अपना इलाज कराने आये थे जिनमें 71,612 नये मरीज तथा 66,296 पुराने मरीज शमिल थे। कुल नये तथा पुराने मरीजों मे से 49.12% पुरूष, 30.80% महिलाऐं तथा 20.08% बच्चों का इलाज सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में हुआ।

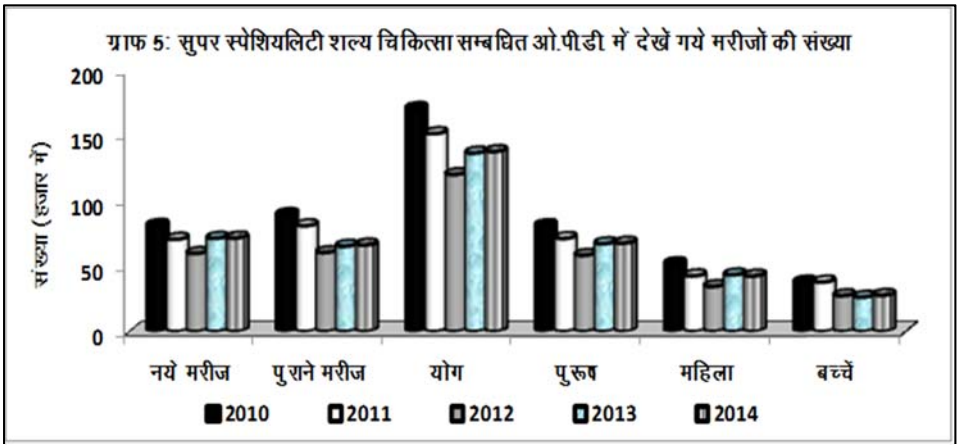

ग्राफ 5 से स्पष्ट है कि वर्ष 2010 से वर्ष 2012 तक सुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा मे मरीजों की संख्या मे प्रत्येक वर्ष कमी आयी है, परन्तु वर्ष 2013 और वर्ष 2014 में मरीजों की संख्या मे वृद्धि हुई। ग्राफ से यह भी स्पष्ट है कि वर्ष 2014 मे वर्ष 2010 के सापेक्ष लगभग 33 हजार मरीज कम आये थे। ग्राफ से स्पष्ट है कि वर्ष 2014 व वर्ष 2013 मे नये मरीजों की संख्या मे वृद्धि हुई है जबकि वर्ष 2010 व वर्ष 2012 तक पुराने मरीजों की संख्या नये मरीजों की अपेक्षा ज्यादा थी।

(ड.) आयुर्वेद के सामान्य मेडिकल सम्बंधित ओ.पी.डी. मे मरीजों की संख्या

भारतीय चिकित्सा अर्थात् आयुर्वेद के अन्तगर्त मेडिकल से सम्बंधित निम्न अनुभागों को ओ.पी.डी. के ऑकडो को लिया गया है। जिनमे काय चिकित्सा ,बाल रोग, रसशास्त्र, दृव्यगुण, स्वास्थ्य रक्षणा तथा पंचकर्मा।

सारिणी 6: आयुर्वेद के सामान्य मेडिकल (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	23658	14617	38275	17701	12037	8537
2	2011	25337	14683	40020	17922	12617	9481
3	2012	26724	14464	41188	18327	12211	10650
4	2013	29540	18246	47786	19929	14561	13297
5	2014	35820	17541	53361	22379	16318	14664

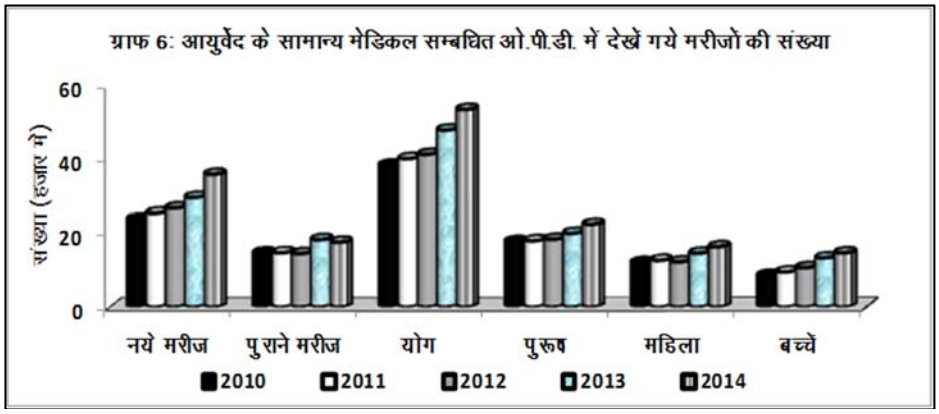

सारिणी 6 के अनुसार आयुर्वेद मे मेडिकल मे वर्ष 2014 से निरंतर मरीजों की संख्या में वृद्धि हुई है तथा प्रत्येक वर्ष नये मरीजों की संख्या पुराने मरीजों की अपेक्षा अधिक रही। वर्ष 2014 मे आयुर्वेद मेडिकल मे 53,361 मरीज आये जिनमे पुरूष, महिला व बच्चों की संख्या का प्रतिशत क्रमशः 41.94%, 30.58%, तथा 27.48% था। सारिणी 6 से यह भी स्पष्ट है कि नये मरीजों की संख्या (35,820) पुराने मरीजों की संख्या (17,541) से लगभग दो गुना थी। ग्राफ 6 से स्पष्ट है कि मरीज बच्चों की संख्या वर्ष 2010 से वर्ष 2014 तक मे निरन्तर वृद्धि हुई परन्तु वर्ष 2014 मे यह वर्ष 2010 के सापेक्ष 6,127 ज्यादा थी। पिछले 5 वर्षो मे आयुर्वेद मेडिकल ओ.पी.डी. मे पुरूष, महिला व बच्चों की संख्या का प्रतिशत लगभग क्रमशः 45%, 30%, तथा 25% था।

(च) आयुर्वेद के शल्य चिकित्सा सम्बंधित ओ.पी.डी. मे मरीजों की संख्या

भारतीय चिकित्सा अर्थात् आयुर्वेद के अन्तगर्त शल्य चिकित्सा से सम्बंधित निम्न अनुभागों के ऑकड़ो को ओ.पी.डी. मे लिया गया है। जिनमे एनो रेक्टल, शाल्य, शालाक्य, प्रसूति एवं स्त्री रोग तथा संक्षा हरण है।

सारिणी 7 के अनुसार वर्ष 2010 मे 49,492 मरीज अपना इलाज कराने सर सुन्दरलाल चिकित्सालय के आयुर्वेद मे शल्य चिकित्सा मे आये जिनमे से 57% पुरूष, 40% महिला व 3% बच्चों की संख्या शामिल थी। शल्य चिकित्सा मे पुराने मरीजो की संख्या नये मरीजो की संख्या से अधिक थी। 2 वर्षो के बाद मरीजों की संख्या 65,695 पहॅुच गयी जिनमे 57% पुरूष, 38% महिला व 5% बच्चों की संख्या थी।

सारिणी 7: आयुर्वेद के शल्य चिकित्सा (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	22661	26831	49492	28235	19903	1354
2	2011	25731	33408	59139	35021	22544	1574
3	2012	28788	36907	65695	37276	25128	3291
4	2013	32193	38764	70957	38217	29022	3718
5	2014	32402	39781	72183	39121	29755	3307

पुनः 2 वर्षो के अन्तराल के बाद मरीजों की संख्या 72,183 हो गयी जिसमे शामिल 54% पुरूष, 41% महिलाऐ तथा 5% बच्चों की संख्या थी। ग्राफ से यह भी स्पष्ट है कि पिछले 5 वर्षो मे पुरूष तथा महिलाओं की संख्या मे निरंतर वृद्धि हुई थी।

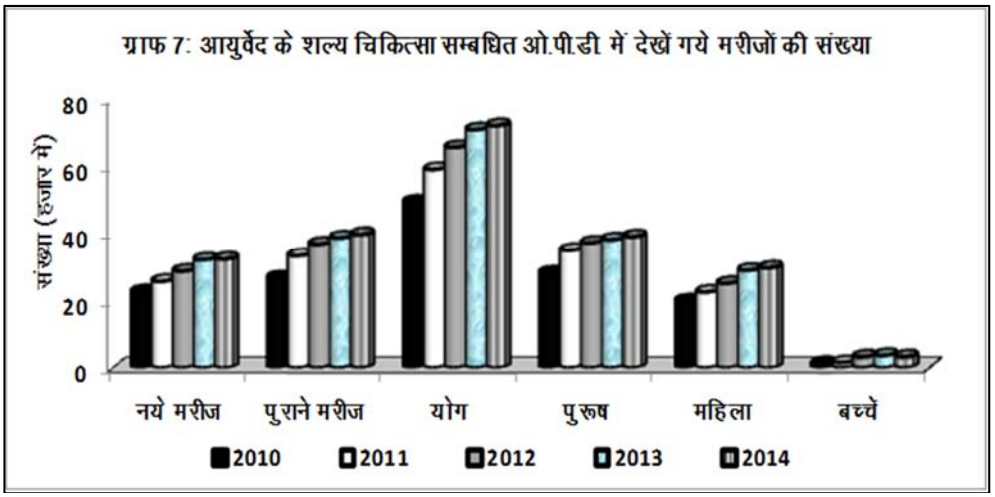

(छ) घाव क्लीनिक (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

घाव भरने का उपचार चुनौतीपूर्ण हो सकता है इसलिए किसी भी प्रकार के घाव को नजरअंदाज नही करना चाहिए। इस चिकित्सा मे त्वचा के छाले, दरारे, संक्रमण, गल जाना अथवा अल्सर का उपचार होता है। घाव क्लीनिक ने कठिन पुराने घावों की चिकित्सा करने मे सफलता प्राप्त की है। घाव क्लीनिक मे एक ही स्थान पर घाव के देखभाल के सभी पहलुओं के विशेषज्ञयों जैसे मेडिसिन, चर्म (त्वचा), सर्जरी इत्यादि को एक साथ लाने से घाव क्लीनिक अच्छी चिकित्सा पद्धति है।

सारिणी 8 से स्पष्ट है कि वर्ष 2014 मे 11,253 मरीज घाव क्लीनिक मे अपना इलाज कराने आये थे जिनमें 7,293 नये मरीज तथा 3,969 पुराने मरीज शमिल थे। कुल नये तथा पुराने मरीजों मे से 53.62% पुरूष तथा 46.38% महिलाओं का इलाज सर सुन्दरलाल चिकित्सालय में घाव क्लीनिक के अन्तगर्त हुआ।

ग्राफ 8 से स्पष्ट है कि वर्ष 2010 से वर्ष 2012 तक घाव क्लीनिक मे मरीजों की संख्या मे प्रत्येक वर्ष वृद्धि आयी है, परन्तु वर्ष 2013 और वर्ष 2014 में मरीजों की संख्या मे कमी हुई। ग्राफ से यह भी स्पष्ट है कि वर्ष 2014 मे वर्ष 2010 के सापेक्ष लगभग 641 मरीजों की वृद्धि हुई।

सारिणी 8: घाव क्लीनिक (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	6690	3922	10612	5821	4788	3
2	2011	7441	5251	12692	6708	5984	0
3	2012	8191	5331	13522	7117	6405	0
4	2013	7464	4405	11869	6289	5580	0
5	2014	7293	3960	11253	6034	5219	0

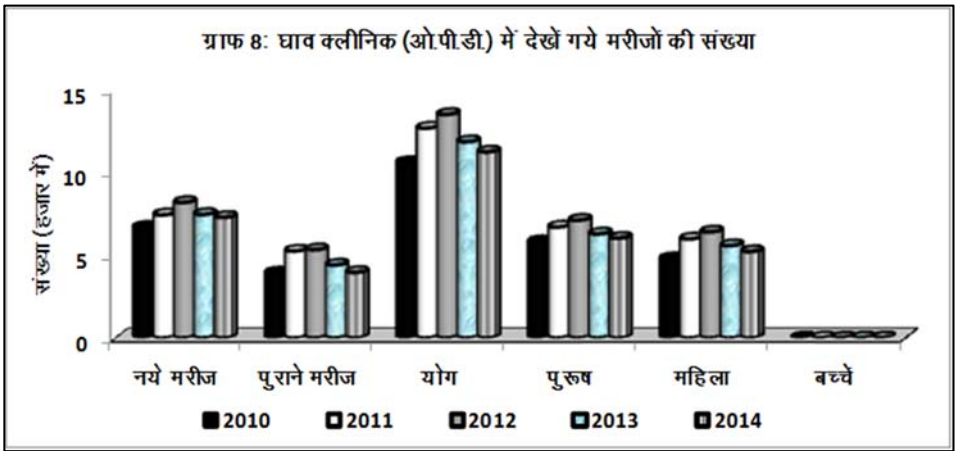

(ज) दंत चिकित्सा (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

सारिणीः 9 से स्पष्ट है कि दंत चिकित्सा ओ.पी.डी. मे वर्ष 2014 मे 39,914 मरीज अपना इलाज कराने आये, जिनमें से 59.43% नये मरीज जबकि 40.57% पुराने मरीज थें। ओ.पी.डी. मे देखे गये कुल मरीजो में से 49.57% पुरूष मरीज, 39.98% महिला और 10.45% बच्चें अपना इलाज कराने आयें थें। सारिणी के अनुसार बहिरंग मे वर्ष 2010 के अन्तगर्त कुल 29,128 मरीज आये थें जिनमें से 19,931 नये तथा 9,197 पुराने मरीज थे। वर्ष 2010 मे कुल मरीजों मे से 8.11% बच्चें, 36.80% महिला तथा 55.09% पुरूषों का इलाज चिकित्सालय में हुआ।

सारिणी 9: दंत चिकित्सा (ओ.पी.डी.) मे मरीजों की संख्या

क्रम संख्या	वर्ष	मरीजों की संख्या					
		नये मरीज	पुराने मरीज	योग	पुरूष	महिला	बच्चें
1	2010	19931	9197	29128	16047	10720	2361
2	2011	19752	10966	30538	16759	10971	2808
3	2012	21224	15547	36771	19151	13959	3661
4	2013	23320	17877	41197	21261	16524	3412
5	2014	23720	16194	39914	19785	15957	4172

पिछले 5 वर्षो का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ग्राफ 9 से स्पष्ट है कि वर्ष 2010 की तुलना मे वर्ष 2014 मे 10,786 अधिक मरीज सर सुन्दरलाल चिकित्सालय की दंत चिकित्सा ओ.पी.डी. मे देखे गये। वर्षवार तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि वर्ष 2013 मे सबसे ज्यादा 41,197 मरीज देखे गये जो वर्ष 2014 लगभग 1,283 मरीज ज्यादा है।

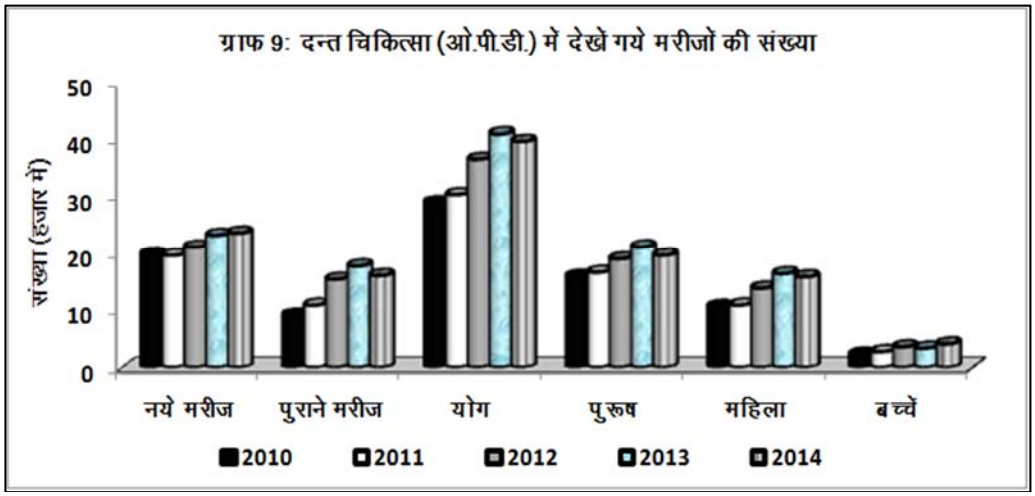

वर्ष 2011 से वर्ष 2014 के बीच प्रत्येक वर्ष नये मरीजों की संख्या वृद्धि हुई परन्तु वर्ष 2013 व वर्ष 2014 के बीच मे पुराने मरीजों की संख्या मे कमी आयी है। वर्ष 2014 मे अन्य वर्षो के सापेक्ष बच्चों की संख्या का प्रतिशत अधिक है जो 10.45% था।

अंतरंग विभाग (आईपीडी)

अंतरंग विभाग में विषम रोगों तथा रोगी की अवस्था को देखकर चिकित्सा करने का प्रबंध होता है। सर सुन्दर लाल चिकित्सालय के बहिरंग विभागों (ओ.पी.डी.) से सम्बंधित अंतरंग विभागों (वार्डो) में भर्ती मरीजों की संख्या को सारिणी 10 मे दर्शाया गया है।

सारिणी 10: वर्षवार अंतरंग में भर्ती हुए मरीजों की संख्या

चिकित्सा पद्धति		वर्षवार भर्ती हुए मरीजों की संख्या				
		2010	2011	2012	2013	2014
आधुनिक चिकित्सा	सामान्य मेडिकल चिकित्सा	13812	13897	13299	14534	16119
	सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल चिकित्सा	4822	5059	5793	6159	5510
	सामान्य शल्य चिकित्सा	15010	15951	15850	15452	14842
	सुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा	5583	5585	5730	5523	5233
	योग	39227	40492	40672	41668	41704
भारतीय चिकित्सा	सामान्य मेडिकल चिकित्सा	1849	2126	2164	2358	2752
	शल्य चिकित्सा	2586	2781	2811	2818	2683
	योग	4435	4907	4975	5176	5435

नोटः यहाँ स्पेशल वार्ड मे भर्ती मरीजों का ऑकड़ा शामिल नही है।

(क) भारतीय चिकित्सा पद्धति के अन्तगर्त भर्ती मरीजो की संख्या

सर सुन्दर लाल चिकित्सालय के भारतीय चिकित्सा पद्धति अर्थात आयुर्वेद के अन्तगर्त शामिल ओ.पी.डी. से सम्बंधित अंतरंग मे भर्ती मरीजों की संख्या का आंकड़ो को वर्षवार सारिणी 10 मे दर्शाया गया है। पिछले 5 वर्षो के भर्ती मरीजों के ऑकड़ो को ग्राफ 10 मे दर्शाया गया है ग्राफ के अनुसार आयुर्वेद के सामान्य मेडिकल से सम्बंधित वार्डो मे प्रत्येक वर्ष भर्ती मरीजों की संख्या मे वृद्धि हुई है जबकि शल्य चिकित्सा के वार्डो मे वर्ष 2010 से वर्ष 2013 तक वर्ष भर्ती मरीजों की संख्या मे वृद्धि हुई परन्तु वर्ष 2014 मे भर्ती मरीजों की संख्या मे कमी हुई।

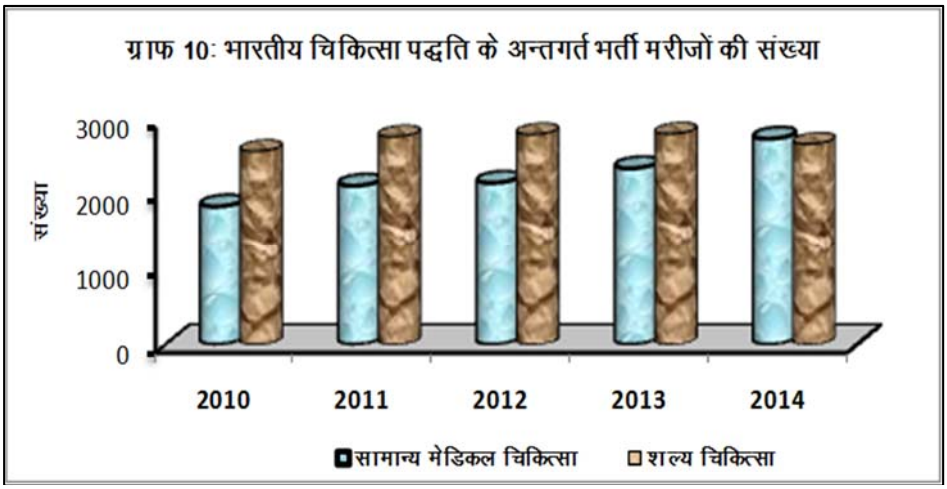

आयुर्वेद के सामान्य मेडिकल के ओ.पी.डी. मे आये मरीजों की संख्या के सापेक्ष भर्ती मरीजों की संख्या का प्रतिशत वर्ष 2011 मे सबसे अधिक 5.31% था जबकि वर्ष 2012 मे 5.25%, वर्ष 2014 मे 5.16%, वर्ष 2013 मे 4.93% तथा सबसे कम वर्ष 2010 मे 4.83% था। इसी प्रकार से शल्य चिकित्सा से सम्बंधित ओ.पी.डी. मे आये मरीजों की संख्या के सापेक्ष भर्ती मरीजों की संख्या का प्रतिशत वर्ष 2010 से प्रत्येक वर्ष कमी आयी है अर्थात वर्ष 2010 मे 5.23% सबसे अधिक तथा सबसे कम वर्ष 2014 मे 3.72% था।

(ख) आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अन्तगर्त भर्ती मरीजो की संख्या

चिकित्सालय के आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अन्तगर्त शामिल ओ.पी.डी. से सम्बंधित अंतरंग मे भर्ती मरीजों की संख्या का ऑकड़ो को वर्षवार सारिणी 10 मे दर्शाया गया है। पिछले 5 वर्षो के भर्ती मरीजों के ऑकड़ो को ग्राफ 11 तथा 12 मे दर्शाया गया है।

ग्राफ 11 से स्पष्ट है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति मे सामान्य चिकित्सा के अन्तगर्त वर्ष 2010 मे 13,812 मरीज भर्ती हुए, जबकि ये ऑकड़ा वर्ष 2014 मे 16,119 था जो पिछले वर्ष 2013 से 2,222 अधिक है। सामान्य शल्य चिकित्सा के अन्तगर्त पिछले 5 वर्षो मे लगातार भर्ती मरीजों की संख्या मे कमी आयी है। वर्ष 2010 मे यह संख्या 15,951 थी जो घटकर वर्ष 2014 मे 14,842 हो गयी। सामान्य मेडिकल चिकित्सा से सम्बंधित ओ.पी.डी. मे आये मरीजों की संख्या के अनुपात में भर्ती मरीजों की संख्या पिछले 5 वर्षो मे अर्थात् वर्ष 2010 से वर्ष 2014 के बीच क्रमशः 4.64% (वर्ष 2010), 4.56% (वर्ष 2011), 4.05% (वर्ष 2012), 4.01% (वर्ष 2013) 4.58% (वर्ष 2014) थी जबकि सामान्य शल्य चिकित्सा मे भर्ती मरीजों का अनुपात ओ.पी.डी. के सापेक्ष क्रमशः 5.79% (वर्ष 2010), 5.78% (वर्ष 2011), 5.47% (वर्ष 2012), 4.86% (वर्ष 2013) तथा 4.57% (वर्ष 2014) मरीज भर्ती हुए।

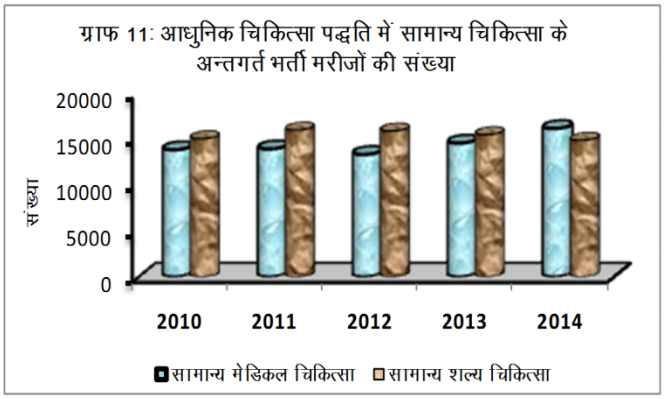

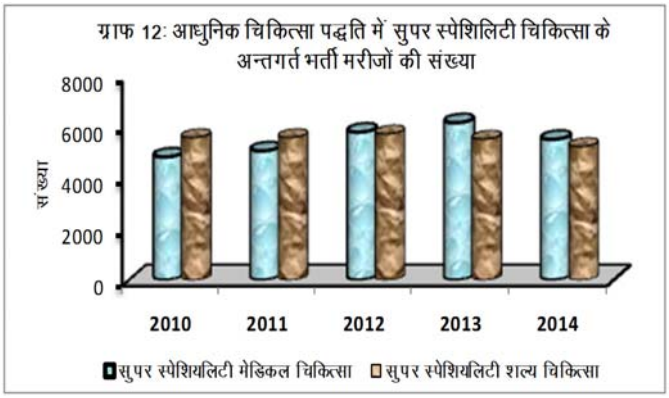

ग्राफ 12 से स्पष्ट है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति मे सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल चिकित्सा के अन्तगर्त वर्ष 2012 मे 5,793 मरीज भर्ती हुए, जबकि ये ऑकड़ा वर्ष 2014 मे 5,510 था जो पिछले वर्ष 2013 से कम है। सुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा के अन्तगर्त पिछले 3 वर्षो मे लगातार भर्ती मरीजों की संख्या मे कमी आयी है। वर्ष 2012 मे यह संख्या 5,730 थी जो घटकर वर्ष 2014 मे 5,233 हो गयी। सुपर स्पेशियलिटी मेडिकल चिकित्सा से सम्बंधित ओ.पी.डी. मे आये मरीजों की संख्या के अनुपात में भर्ती मरीजों की संख्या पिछले 5 वर्षो मे लगातार कमी आयी अर्थात् वर्ष 2010 से वर्ष 2014 के बीच क्रमशः 3.27% (वर्ष 2010), 3.33% (वर्ष 2011), 3.24% (वर्ष 2012), 3.17% (वर्ष 2013), 2.81% (वर्ष 2014) थी जबकि सुपर स्पेशियलिटी शल्य चिकित्सा मे भर्ती मरीजों का अनुपात ओ.पी.डी.के सापेक्ष क्रमशः 3.72% (वर्ष 2010), 3.68% (वर्ष 2011), 4.76% (वर्ष 2012), 4.04% (वर्ष 2013) तथा 3.79% (वर्ष 2014) मरीज भर्ती हुए।

निष्कर्ष

आधुनिक समय में अस्पताल की आवश्यकताएं अत्यंत विशिष्ट हो गई है और उनकी योजना बनाना भी एक विशिष्ट कला है। सर सुन्दरलाल चिकित्सालय वाराणसी की जनता के साथ–साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश से आने वाले हजारों मरीजों की सेवा कर महामना पंड़ित मदनमोहन मालवीय जी के सपनों को साकार कर रहा है। उपयुक्त अनुसंधान लेख से निम्न निष्कर्ष उजागर होते है

- चिकित्सालय की ओ.पी.डी. प्रतिदिन 3 हजार से अधिक मरीज प्रतिदिन आते है।
- वर्ष 2010 की तुलना में वर्ष 2014 में 1.2 गुना अधिक मरीज बहिरंग विभाग में देखे गये।
- भारतीय चिकित्सा पद्धति के सामान्य मेडिकल चिकित्सा से सम्बंधित अंतरंग में भर्ती मरीजों की संख्या मे लगातार वृद्धि

हुई है।

- आधुनिक चिकित्सा पद्धति के सामान्य शल्य चिकित्सा से सम्बंधित अंतरंग में भर्ती मरीजों की संख्या में पिछले 4 वर्षों मे लगातार कमी हुई है।
- आधुनिक चिकित्सा पद्धति के सामान्य मेडिकल चिकित्सा से सम्बंधित अंतरंग में भर्ती मरीजों की संख्या वर्ष 2010 मे 13,812 से बढ़ कर वर्ष 2014 मे 16,119 हो गयी।

उपयुक्त आंकड़ो और निष्कर्ष के आधार पर चिकित्सालय को ओर अधिक सुंदर बनाने के साथ ही उसे अत्याधुनिक चिकित्सीय उपकरणों से लेंस और अधिक सुविधाजनक बनाना चाहिए। चिकित्सालय में मरीजों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है इसे देखते हुए बहिरंग और अंतरंग का दायरा बढाने की आवश्यकता है। यह चिकित्सालय लगभग 25 करोड़ आबादी को लाभान्वित करता है।

संदर्भ

1. वार्षिक रिपोर्ट 2010: सर सुन्दर लाल चिकित्सालस, चिकित्सा अभिलेख अनुभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
2. वार्षिक रिपोर्ट 2011: सर सुन्दर लाल चिकित्सालस, चिकित्सा अभिलेख अनुभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
3. वार्षिक रिपोर्ट 2012: सर सुन्दर लाल चिकित्सालस, चिकित्सा अभिलेख अनुभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
4. वार्षिक रिपोर्ट 2013: सर सुन्दर लाल चिकित्सालस, चिकित्सा अभिलेख अनुभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
5. वार्षिक रिपोर्ट 2014: सर सुन्दर लाल चिकित्सालस, चिकित्सा अभिलेख अनुभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
6. वार्षिक रिपोर्ट 2013: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
7. www.bhu.ac.in
8. www.bhu.ac.in/ims/
9. www.bhu.ac.in/ims/hospital/